

सूरह अल-अस्र की व्याख्या

रेटगि:

वविरण: ?? ????? ?? ?? ????? ??? ?? ????? ??????????? ?? ????? ?? ????? ?? ??? ????? ??? ?? ????? ?? ??
????????? ?? ?? ?????? ?? ?? ????? ????? ?? ?????? ?? ????? ??? ????? ???

श्रेणी: [पाठ](#) > [पवतिर कुरआन](#) > [चयनति छंद की व्याख्या](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2014 NewMuslims.com)

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

उददेश्य:

·कुरआन के सबसे महान सूरह में से एक सूरह अल-अस्र का अर्थ समझना।

अरबी शब्द:

·???? - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर मुहम्मद और उनके साथियों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रिकॉर्ड है।

·????? - "सहाबी" का बहुवचन, जिसका अर्थ है पैगंबर के साथी। एक सहाबी, जैसा कि आज आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह है जिसने पैगंबर मुहम्मद को देखा, उन पर विश्वास किया और एक मुसलमान के रूप में मर गया।

·???? - धैर्य और यह एक मूल शब्द से आया है जिसका अर्थ है रुकना या बचना।

·?????? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।

·??? - सच। अल-हक़ (सच्चा) अल्लाह के नामों में से एक नाम है।

परचिय

सूरह अल-अस्र क़ुरआन का एक सौ तीन (103) नंबर का सूरह है। इसे व्यापकता के अतुलनीय उदाहरण के रूप में संदर्भित किया गया है क्योंकि यह तीन संक्षिप्त छंदों में सफलता का मार्ग और वनाश का मार्ग बताता है। इमाम अश-शफी ने कहा कि अगर लोग इस सूरह को अच्छी तरह से मानते हैं तो यह मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त होगा। कई हदीस उस उच्च सम्मान के बारे में बताते हैं



जिसमें सहाबा ने इस सूरह का पालन किया था। तदनुसार जब भी कोई दो या दो से अधिक सहाबी मलिते, तो वे सूरह अल-अस्र पढ़े बिना एक-दूसरे से अलग नहीं होते थे।^[1]

यह वेब साइट आपको सूरह अल-अस्र को सीखने, पढ़ने और याद करने में मदद करेगी।

<http://www.mounthira.com/learning/surah/103-al-asr/>

“नचिड़ते समय की शपथ! नःसिंदेह, इन्सान क़्षतिमें है। सविा उनके, जो ईमान लाये तथा सदाचार कयि एवं एक-दूसरे को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का उपदेश देते रहे।” (क़ुरआन 103)

यह सूरह मानवजातके लिए नसीहत है। अल्लाह "समय" की शपथ लेता है और घोषणा करता है कि मानवजातनुकसान की स्थितिमें है। हर एक इंसान, पुरुष या महिला, नुकसान की स्थितिमें है, सविय उन लोगों के जो चार काम करते हैं; आस्था रखते हैं, धर्म के काम करते हैं, और एक दूसरे को सत्य, और सब्र करने की सलाह देते हैं।

अस्र का अर्थ

अस्र शब्द का सरल अनुवाद समय है। हालांकि अस्र के अरबी शब्द समय की तुलना में एक अन्य अरबी शब्द का बहुत गहरा अर्थ है, दहर। दहर का अर्थ है वो समय जिसकी कोई सीमा नहीं है, दूसरी ओर अस्र का अर्थ है वह समय जो सीमति है; वह समय जो समाप्त हो जाएगा। भाषाई स्तर पर अस्र का एक अर्थ कुछ ऐसा होता है जैसे दबाया या नचिोड़ा जा सके। अल्लाह समय की कसम खा रहा है, एक सीमति समय, एक समय जो समाप्त होगा और एक समय जिसे नचिोड़ा या दबाया जा सकता ताकिमानवजातअपने सीमति समय से जतिना संभव हो उतना प्राप्त कर सकें।

अल्लाह हमें समय बीतने पर चतिन करने के लिए भी कह रहा है। एक और अर्थ जो अस्र शब्द को दिया गया है वह है गुजरता दनि, अस्र की नमाज़ का समय, जब दनि समाप्त होने वाला होता है। अल्लाह हमें बता रहा है किहमारा समय छोटा और सीमति है और अगर हम इसका सदुपयोग नहीं करेंगे तो हम नश्चिति रूप से हारे हुए हैं, वास्तव में, अल्लाह कहता है, हम नुकसान में हैं।

नुकसान का अर्थ

नुकसान का अरबी शब्द खुसर है और यह लाभ का विपरीत है, और इस प्रकार इसका अर्थ दवालयिापन भी है। इस संदर्भ में इसका अर्थ यह हो सकता है कि मानवजाति परलोक के लिए अपनी मुख्य पूंजी खो देगा यदि वह इस जीवन का उपयोग आस्था और कर्मों से उसे हासिल करने के बजाय, इसे अविश्वास और पाप से खत्म कर दे।

हमें कुछ बहुत ही खास खोने का खतरा है, और यह परलोक में एक आनंदमय जीवन है। हालांकि इस महान नुकसान से पहले हम अल्लाह के प्रति अपनी निकटता खो देंगे, और इस प्रकार इस जीवन की शांति और धीरज खो देंगे। संतोष न होने से कभी-कभी मानवजाति विश्वासघाती कार्य कर सकता है और मुसीबत और संघर्ष के समय में गलत कार्य कर सकता है। लेकिन अल्लाह हमें लगातार चेतावनी दे रहा है और यहां वह एक बार फिर कह रहा है, रुको, सोचो और खुद को बचाओ। अपने चरित्र में ये चार चीजें रखकर खुद को बचाएं:

1. विश्वास करना। मोक्ष का पहला कदम सही विश्वास को बनाए रखना और दृढ़ विश्वास और निश्चिंता के साथ उसका पालन करना है।
2. अच्छे कर्म करना। हम अल्लाह को प्रसन्न करने वाले कार्य कर के इस निश्चिंता को प्राप्त कर सकते हैं; हम अपने कर्मों या धार्मिक कार्यों से अपना विश्वास दिखा सकते हैं। हमारे कर्म कुरआन और प्रामाणिक सुन्नत के अनुसार होने चाहिए। ये कर्म हमारी भावना और इच्छा के अनुसार नहीं होने चाहिए। सफलता का सच्चा संकेत अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करना और पाप करने की इच्छा का विरोध करना है।
3. सत्य को प्रोत्साहित करना, इसकी सलाह देना या इसका पालन करना। अरबी में हक़। अल्लाह हमें एक-दूसरे को सच्चाई याद दिलाने और इसके प्रति विफादार रहने के लिए प्रोत्साहित करने, और न्याय के लिए सच्चाई को स्पष्ट रूप से सामने लाने के लिए कह रहा है।
4. एक-दूसरे को सब्र करने की सलाह देना चौथी विशेषता है, और हक़ के प्रति प्रतिक्रिया स्थापित करना सब्र के बिना संभव नहीं होगा। अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करने में दृढ़ रहने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है, पापों से दूर रहने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है, और विपत्तियों के समय निराशा न होने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। इब्नुल क़य्यामि [2] ने समझाया कि सब्र होने का मतलब है खुद को निराशा से रोकने की क्षमता, शिकायत से बचना, और दुख और चिंता के समय में खुद को नियंत्रित करना।

यह सूरह उन लोगों को सलाह देती है जो परलोक में अपनी स्थितिको मजबूत करने के लिए सामूहिक रूप से कार्य करने पर विश्वास करते हैं। इसका अर्थ है लोगों को अच्छे काम करने के लिए कहना और आमंत्रित करना और उन्हें पाप और अविश्वास में पड़ने से रोकना।

इस सूरह का रहस्योद्घाटन कठिन समय के दौरान हुआ था। शुरुआती मुसलमानों को जुल्मों का सामना करना पड़ा और सूरह अल-असर ने उन्हें अपने परीक्षणों और समस्याओं का सामना करने के लिए ताकत और आत्मविश्वास दिया। शायद यही कारण है कि यह सहाबा को बहुत प्रिय थी और यह अभी भी उन लोगों के लिए प्रिय है जो नेक जीवन जीने की कोशिश करते हैं। आजकल जब कोई व्यक्ति खुद को नुकसान में पाए, तो वह सूरह अल-असर में अल्लाह द्वारा दी गई संक्षिप्त सलाह का पालन करके अपनी स्थितिको बदल सकता है।

फुटनोट:

[1] अत-तबरानी

[2] इब्नुल क़य्यमि अल जवजयिह, 1997, पेशेंस एंड ग्रटटूड, अंग्रेजी अनुवाद, यूनाइटेड कगिडम, ताहा प्रकाशक

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/index.php/hi/articles/247>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।